VOL- VIII ISSUE- VI JUNE 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

नासिरा शर्मा कृत 'ठीकरे की मंगनी में' स्त्री प्रतिरोध

डॉ. गोपीराम शर्मा सहायक प्रोफेसर (शोध निर्देशक)
सुमन बिश्नोई (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग, डॉ. भीमराव अम्बेडकर
राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

उद्देश्य :

१. *नासिरा शर्मा के साहित्य से परिचित होना।*
२. *नासिरा शर्मा के उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी' के मूल कथ्य को जानना।*
३. *ठीकरे की मंगनी में स्त्री प्रतिरोध की विभिन्न स्थितियों को समझना।*
४. *साहित्य के माध्यम से स्त्री प्रतिरोध को समझकर समाज को संदेश देना।*
५. *साहित्य की श्रीवृद्धि करना।*
६. *नये शोधार्थी और अध्यताओं के लिए इस विषय हेतु मार्ग प्रशस्त करना।*

शोध प्रविधि : *इस शोध आलेख में लिखित सामग्री को आधार बनाया गया है। आलोच्य शोध कार्य साहित्य से सम्बन्धित है। इसमें कार्य क्षेत्र, साहित्यकार और उसके रचनाकर्म तथा अन्य विद्वानों आलोचनाकर्म के आस–पास रहेगा। द्वितीयक स्रोत के आंकड़ों या सूचना हेतु आगमन–निगमन विधि सापेक्षवादी ज्ञान मीमांसा पद्धति द्वारा विश्लेषणात्मक, संश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक व अवधारणात्मक अध्ययन करते हुए उपर्युक्त विधियों में सूचनाएँ प्राप्त हो सकेगी तथा शोध कार्य का निष्कर्ष निकाला जायेगा।*

शोध सार : *यह आलेख स्त्री में जागरूकता के साथ–साथ उसमें आये बदलाव को प्रस्तुत करता है। स्त्री के समर्पण, भावुकता तथा संवेदनशीलता की भावना को उसकी कमजोरी मान लिया गया है। महरूख का जीवन उन स्त्रियों के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी मुक्ति को अकेले में न ढूंढ कर, समाज के उपेक्षित निम्न वर्ग के संघर्षरत, शोषित, पीड़ित पात्रों के मुक्ति से जोड़कर मुक्ति के प्रश्न को व्यापक बना देती है यह मुक्ति उस अकेली को नहीं मिलती बल्कि समाज की सभी स्त्रियों को मिलती है।*

बीज शब्द : *उपन्यास, रूढ़िवादी विचारधारा, पितृसत्तात्मक, दकियानुसी, मंगनी, ठीकरा, निकाह, औचित्य, औरत, ठुकराना, प्रतिरोध आदि।*

साहित्य समीक्षा :

नासिरा शर्मा से सम्बन्धित कई आलोचनात्मक पुस्तकें अब तक प्रकाशित हुई है। न्यूनाधिक कार्य बहुत से विश्वविद्यालयों में हुआ है। नासिरा शर्मा पर कुछ साहित्य मिलता है वह इस प्रकार है –

१. 'कथाकार नासिरा शर्मा' – श्री ओहाल मोहन विट्ठलराव, डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विद्यापीठ, औरगांबाद (महाराष्ट्र), १९९८ ई.।
२. नासिरा शर्मा का कथा–साहित्य : संवेदना एवं शिल्प– प्रो. भारती बालकृष्ण धोकड़े, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल्ल टिब्बरेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनू, २०१४ ई.।
३. नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री स्वतन्त्रता की अवधारणा, कला टी.वी. डॉ. रॉय जोसफ, महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र), २०१३ ई.।
४. नासिरा शर्मा के साहित्य में स्त्री–विमर्श– अमरीश सिन्हा, गोवा विश्वविद्यालय (गोवा), २०१३ ई.।
५. नासिरा शर्मा के कहानी साहित्य में समकालीन साहित्य – अशोक एम.बांभणिया, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर (गुजरात), २०१५ ई.।

६. नासिरा शर्मा का रचना संसार – रज्जिनी कृष्णन आर., कोचीन युनिवर्सिटी ऑफ सांइस एण्ड टेक्नोलॉजी (कोच्ची), २००७ ई.।
७. हिन्दी महिला उपन्यासकारों के कथा साहित्य में नारी विमर्श ; एक अध्ययन– महेश बी. मालकिया, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर (गुजरात), २०१५ ई.।

अब तक के शोध कार्यों एवं पुस्तकों में नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व, कृतित्व, उनके स्त्री पात्र, संवेदनाएं, समसामायिकता, अन्तर्संयोजन के सूत्र, कहानियों में स्त्री चेतना आदि कोई न कोई विशिष्ट पक्ष उद्घाटित हुआ है। कोई न कोई समस्या इनमें वर्णित है परन्तु समग्र रूप से नासिरा शर्मा के कथा साहित्य को एक स्थान विश्लेषित–संश्लेषित नहीं किया जा सका है। नासिरा शर्मा के साहित्य की मूल चेतना स्त्री चेतना है जिसके सम्पूर्ण एवं गहन अध्ययन की आवश्यकता है। हिन्दू समाज के साथ मुस्लिम समाज की स्त्रियों की समस्याएँ वर्णित करना और उनका समाधान ढूढना एक स्त्री का ही कार्य हो सकता है। नासिरा शर्मा ने दोनों समुदायों को जिया है अत: उनकी भोगी एवं अनुभव की परिस्थितियों का लाभ समाज को मिलना आवश्यकता है। इन शोध विषय का चुनाव इसी को दृष्टिगत रखते हुए किया गया है।

निष्कर्ष :

नासिरा जी का यह उपन्यास विशेष रूप से स्त्री प्रतिरोध पर जोर देता है। जिसकी पात्र महरूख के माध्यम से नासिरा जी स्त्रियों को पुरुष के सहारे बैठे रहने नहीं बल्कि हिम्मत कर आगे बढ़ने पर जोर देती है। इस उपन्यास में पात्र महरूख जगह–जगह प्रतिरोध कर रही है और उस प्रतिरोध के साथ जीवन यापन भी कर रही है। समाज के सामने पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलती है और इस पुरुष प्रधान समाज में अपनी एक स्त्री होने की अलग छाप भी छोड़ती है। मुख्यत: पुरुषों द्वारा स्त्री को ठुकराया जाता है परन्तु इस उपन्यास में एक स्त्री द्वारा पुरुष को ठुकराने का साहस दिखाया गया है। जो आज के समाज में स्त्रियों के लिए एक आदर्श भी है और सराहनीय कार्य भी।

विषय उपस्थापन :

हिन्दी उपन्यास साहित्य ने अब तक बहुत लम्बी यात्रा कर ली है। अपनी इस यात्रा में उपन्यासों ने समाज को दिशा दिखाने में अपनी भूमिका निभाई है। कुछ ऐसे उपन्यास इस काल में मिल जाते हैं जो वैचारिक दृष्टि से छाप छोड़ जाते हैं ऐसे उपन्यासों में से एक उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी' को रखा जा सकता है यह उपन्यास वर्तमान सन्दर्भ में महिलाओं के आन्तरिक और बाह्य दोनों स्थितियों का शानदार ताना–बाना बुनता हुआ हमारे सामने उजागर होता है। यह उपन्यास रूढ़िवादी विचारधारा एवं पितृसत्तात्मक समाज की खोखली विडम्बनाओं को उधेड़ कर पाठकों के समक्ष रखता है।

नासिरा शर्मा के 'ठीकरे की मंगनी' उपन्यास में दो पात्रों को मुख्य रूप से प्रस्तुत किया गया है ये दोनों ही पात्र प्राचीन एवं आधुनिक परिवेश के बदलते विचारों एवं मूल्यों को बखूबी प्रकट करते है। एक ओर रफतभाई जहाँ पुरुष प्रधान समाज के उसी पुराने ढर्रे को अपनाने के साथ–साथ महरूख की जिन्दगी में बहुत सारे बदलाव ही लाता है तो दूसरी ओर रफतभाई आधुनिक सोच रखते हुए महरूख को पुरानी बेड़ियों, रीति–रिवाजों और दकियानूसी तौर–तरीकों को छोड़कर आधुनिक सोच की लड़की बनाना चाहते हैं वे उसे रूढ़िवादी गाँव से निकालकर दिल्ली जैसे शहर ले जाकर गांव की बेकस मजलूम औरतों के लिए मिशाल बनाना चाहते हैं ताकि महरूख के बनाये रास्ते पर चलकर औरते अपना विकास करे, अपने अधिकारों को पहचाने, अपनी आजादी के रास्ते पर चलकर हिन्दुस्तान का नाम रोशन करे। वहीं दूसरी ओर रफतभाई हमेशा आगे बढ़ने में विश्वास करते हैं चाहे इसके लिए उन्हें किसी के सपनों को रौंदना पड़े, जिन्दगी को कुचलना पड़े जैसे महरूख, और इस बात का पछतावा भी नहीं करते और सोचते हैं कि इन सब चीजों का किसी पर कोई फर्क ही नहीं पड़ेगा मैं जैसा छोड़कर गया हूँ वैसा ही मुझे वापिस मिल जायेगा। इसका विरोध करते हुए महरूख कहती है कि ''मैं जगह, चीज या मकान नहीं थी, रफत भाई जो वैसी की वैसी रहती। मैं इन्सान थी, कमजोरियों का पुतला।''[१] रफतभाई की अमेरिका मेम के साथ लिविंग टू गेदर वाली जिन्दगी जीना आधुनिक सोच है तो महरूख से 'ठीकरे की

मंगनी' रूढ़िवादी प्राचीन सोच जिसके चलते एक लड़की की जिन्दगी तबाह करना कहा तक सही है।

दूसरी ओर महरूख का चरित्र आता है जो स्त्री के मन की संवेदनशीलता को बखूबी प्रकट करता है जो समाज, परिवार एवं राष्ट्र के हित में बेशक योगदान दे सकती है। मगर कहीं न कहीं निजी जिन्दगी पर स्वयं के प्रति कुछ प्रश्न छोड़ देती है क्या औरत सिर्फ इन्तजार करने के लिए बनी है। क्या उसका जीवन इस पुरुष सत्तात्मक समाज में हमेशा कुर्बानी देने के लिए ही होता है? क्या उसे हक है अपने सपने पूरे करने का? अपनी जिन्दगी को अपने तरीके से खुलकर जीने का? रफतभाई जैसे किरदार को जो आज की औरतों के लिए सम्बल बनकर तो आते है पर कहीं न कहीं उसके बदले में भावनाओं की बलि देने को मजबूर कर देते है। जैसा कि उपन्यास के पूर्वार्द्ध में महरूख को रफत के प्रति समर्पित एवं सतत् इन्तजार करते हुए दिखाया जाता है वहीं एक लम्बे अरसे बाद उसे अहसास होता है कि उसकी अपनी भी कोई जिन्दगी है और यही सोचते हुए वह अपनी जिन्दगी को एक नया मोड़ देती है और कहीं न कहीं रफतभाई के प्रति उमड़ती भावनाओं को समाज को समर्पित करने का जिमा उठाती है और रफतभाई के अमेरिका से लौटकर निकाह करने के प्रस्ताव को कड़े प्रतिरोध के साथ ठुकरा देती है और उसके सामने एक आधुनिक सोच की नारी के विचार रखती है कि उसे जीने के लिए सिर्फ पुरुष के कन्धे की जरूरत नहीं है वह अपने स्वाभिमान के साथ भी जी सकती है वह किसी के हाथ की कठपुतली नहीं जिसे वे चाहे जैसे नचा सकते हैं। उसकी भी अपनी सोच है उसका भी अपना स्वतन्त्र जीवन है जिसे वह स्वयं के तरीके से जीने का हुनर रखती है। वह रफतभाई के सामने एक मिशाल रखती है कि जिस महरूख को छोड़कर वह गये थे वह अब वह महरूख नहीं रही है जिसे रफतभाई ने जैसा कह दिया वैसा सिर झुकाकर मान लिया। वह अब अपनी आधुनिक सोच रखती है और रफतभाई से निकाह के फैसले पर उसे अपने जीवन में पश्चात्ताप भी नहीं होता है। क्योंकि वह सोचती है कि ''कुछ कश्तियाँ भंवर से छुटकारा पाकर जब किनारे लगने लगती है तो इतना खस्ताहाल हो जाती है कि अपने को संभालते–बचाते किनारे के समीप पहुंचकर डूब जाती है। ऐसी कश्ती नहीं बनना है, आँख मूंदकर मूझे कुएँ में नहीं कूदना है, बल्कि मेरा यह तन्हा सफर जारी रहेगा।''[२]

महरूख रफतभाई के उसकी जिन्दगी बर्बाद करने के कारण जीवन के उस पड़ाव से निकल गई थी जहाँ किसी मर्द के लिए उसके जीवन में कोई कोशिश हो वह मर्दो से नफरत नहीं करती क्योंकि बाप, भाई, शौहर, महबूब, बेटा जैसी अहमियत रखने वाले रिश्ते मर्द से ही है परन्तु वह अब किसी के घर की मालकिन बनकर उस रिश्ते को नहीं निभा सकती जिसने उसकी जिन्दगी की काया ही पलट दी हो। महरूख ऐसी बातों को आगे नहीं बढ़ाना चाहती है जिसका उसके जीवन में अब कोई औचित्य ही नहीं रहता है और रफत को शादी करने के लिए कहती है।

रफतभाई जब महरूख से दूर थे तब उसके करीब थे और अब उसके करीब है तो उससे बहुत दूर है और यह करीब आने और दूर जाने का सफर एक–दो दिन का जज्बाती उतार–चढ़ाव न होकर पूरे बारह सालों का सफर है। जिसे रफतभाई एक खेल समझते थे और महरूख के निकाह के प्रस्ताव को ठुकराने के पीछे अपना कसूर बिल्कुल भी नहीं समझते थे और यह तोहमत भी वह महरूख के सिर मढ़ना चाहते थे और गुलनार की शादी में एक बार फिर महरूख को निकाह के लिए मनाने की हिम्मत रखते हैं तब महरूख कहती है कि ''आपने मुझे माफ किया, मगर मैं तो अपने को नहीं माफ कर पाई, रफतभाई बिना रूह का जिस्म मुर्दा होता है और बिना अहसास का रिश्ता ठण्डा समझौता। जहाँ सब कुछ होगा, मगर जान नहीं होगी, जिन्दगी नहीं होगी। ऐसी मुर्दा के साथ आप भी जिन्दगी गुजारना नहीं चाहेगे और मैं तो..... ''[३]

रफतभाई के बार–बार निकाह के लिए कहना और महरूख को ठेस पहुंचाना इस बात को स्पष्ट करता है कि उन्हें इस बात का बिल्कुल भी पछतावा नहीं कि उन्होंने महरूख की जिन्दगी को बर्बाद कर दिया और न ही महरूख की सोच को समझ रहे है कि वह जिस फर्क को मिटाना चाहते हैं वह कभी नहीं मिटेगा और अगर अब यह रिश्ता जुड़ा तो सिवाए समझौते के और कुछ नहीं होगा और फिर कुछ दिन बाद रफतभाई अपने रेस के मैदान में उतर जाएंगे, फिर नई रफ्तार, नई चुनौतियाँ, नई स्कीमें उन्हें

उकसाएंगी और तब वह उनकी बीवी होने के कारण उन्हें इन्कार नहीं कर पाएगी और उसे उनके साथ घसीटते ही सही दौड़ना पड़ेगा। इसलिए वह अब ऐसी जिन्दगी नहीं जीना चाहती जिस मसले पर अटके हुए उसकी उम्र का आधा हिस्सा निकल गया ऐसे समझौते पर वह हस्ताक्षर क्यों करे? उसकी कोई मजबूरी नहीं है, वह स्वतन्त्र है और इन सबके अलावा भी जीवन में जीने के लिए बहुत कुछ है। महरूख के निकाह से इन्कार करने पर वह तिलमिला उठता है और पूरे परिवार के सामने इस निकाह के तोड़ने की वजह महरूख को बताता है। परिवार की लड़की के फैसले पर महरूख की ताई के द्वारा कही गई इन पंक्तियों में भी स्त्री–प्रतिरोध देखने को मिलता है। ''मर्द सौ गलती करें, तो उन्हें माफी, औरत एक करे तो उसके लिए पिस्तौल तैयार हैं। कभी सुना है कोई मर्द औरत के नाम पर बैठा हो, मगर औरत एक मर्द के नाम पर जिन्दगी तज देती है। सारी जिन्दगी उसी के नाम की माला जपती रहती है। जमाना भी नहीं बदलेगा। औरत मर–मर कर जिएगी, चुप रहकर सहेगी।''[४]

फुफ्फो कहती है कि, ''क्या खाक कहते हैं कि जमाना बदला है? पहले लड़की पैदा होते ही जिन्दा गाड़ दी जाती है, आज पाल–पोस कर जवान लड़की दफन कर दी जाती है।''[५]

घर की औरतों की इन सब बातों में मर्दो के प्रति प्रतिरोध झलकता है निकाह औरत और मर्द दोनों के लिए जरूरी है परन्तु इतना भी जरूरी नहीं है कि किसी बेजान दीवार, पलंग या अन्धे, लूले, लंगड़े रास्ते चलते किसी से भी कर लिया जाये। आज की पढ़ी–लिखी लड़की शौहर के रूप में एक ऐसा साथी चाहती है जो एक लड़की के हर अहसास में कितनी शिद्दत, कितना विस्तार, कितने अर्थ और कितने आयाम शामिल होते है को समझे, उसे हर हाल में संभाले। उसके मन में उठ रहे प्रश्नों को हल कर उन्हें शान्त करें। वह जैसी है उसे वैसा स्वीकार करें वरना ऐसे रिश्ते किस काम के – ''जोड़े तो जानवरों के भी होते है। घौंसले बनाकर अण्डे तो परिन्दे दे लेते हैं, मगर इन्सान सिर्फ इसी काम के लिए तो नहीं बना है न।''[६]

उपन्यास में जहां कहीं भी वह या कोई स्त्री पुरुषों द्वारा प्रताड़ित होती है तो वह चुप नहीं बैठती उसका हृदय जब पीड़ित होता है तो वह प्रतिरोध के लिए भी उठती है। जैसे–महानगर में जब रवि उसके साथ गलत बर्ताव करता है तो वह उसका विरोध करते हुए कहती है कि– ''उसके किस बर्ताव से रवि ने उसे इतना हल्के किरदार की लड़की समझ लिया? इजाजत तो ले सकता था। उसकी मर्जी जाने बिना....। यह भी कोई बात हुई?''[७] क्या लड़के–लड़की की दोस्ती का अंत इसी प्रकार का होता है?

इसी उपन्यास में एक जगह और नासिरा जी द्वारा स्त्री–प्रतिरोध दिखाया गया है। विद्यालय में जब संजय और इशरत उसे परेशान करते हैं तो वह झिड़की देते हुए कहती है कि– ''आज के बाद आप दोनों अपने आपे में रहिएगा और तमीज के साथ मुझसे पेश आइएगा वरना मुझे कोई सख्त कदम उठाना पड़ेगा... और खबरदार जो आगे से आपने मुझसे बेतकल्लुक होने की कोशिश की। शराफत की भी एक हद होती है। अब जाइए आप दोनों यहां से।''[८]

इसी प्रकार जब बिंदो के साथ काशी जबरदस्ती करता है तो उनकी चुप रहकर सब सहने की मजबुरी को देखकर उसका मन बुरी तरह दुखता है तो वह सोचती है कि– ''अपने अधिकारों के हनन के खिलाफ उठा इनका एक कदम इन्हें वर्षों प्रताड़ना के साथ जुल्म सहने पर मजबूर करेगा। पता नहीं दूसरा मांगी कब पैदा हो पासी टोले में?''[९]

इसी प्रकार जब अमृता अपने ससुराल वालों से दुखी होकर नींद की गोलियां खाती है तो महरूख का हृदय पीड़ित होता है और वह उसे समझाते हुए कहते हैं कि– ''उठो कमजोर लड़की अपने बेटे को संभालों और इस तरह से संभालों ताकि कल कोई लड़की उसके साथ रहकर नींद की गोलियां खाने पर मजबूर न हो सके।''[१०]

गांव की गरीबी उसे परेशान करती है वह गांव के लोगों को शिक्षा देकर गांव का कुछ सुधार करना चाहती है महरूख की पीड़ा इन शब्दों में व्यक्त होती है– ''अजीब नामहरूमी से भरी जिन्दगी है यह! खाना, तो कपड़ा नहीं, कपड़ा है, तो घर नहीं और अगर तीनों है, तो फिर पढ़ाई और नौकरी की सहूलियतें नहीं है, मगर ये सारी कमियाँ तो बस इस तबके की तकदीर बन गई है, वरना एक तबका हिन्दुस्तान में ऐसा भी है, जहाँ ये चीजें न सिर्फ बहुतायत से है, बल्कि बरस रही है। यह फर्क क्या कभी मिटेगा?''[११]

महरूख की नौकरानी लछमिनियां गर्भवती होती है और प्रसव के समय गांव में कोई सुविधा तथा डॉक्टर के न होने पर वह तिलमिला उठती है और इन शब्दों में डॉक्टरों के प्रति अपने आक्रोश को व्यक्त करती है– ''पता नहीं डॉक्टरों के दिल में रहम का जज्बा क्यों नहीं पैदा होता कि वह दिन न सही, चलो, साल में ही एक चक्कर गांव के लगा लें। आखिर खुदा के बाद इन गरीबों को बचाने वाले वहीं तो है, मगर उनके दिल में रहम नहीं, वह भी जैसे अपनी ट्रेनिंग के दिन भूलकर बस अमीरों का इलाज करने में मस्त रहते हैं।''[१२] महरूख के इन शब्दों का डॉ. विमला पर फर्क भी पड़ता है और वह महिनें के एक रविवार गांव में आकर लोगों का मुफ्त में ईलाज भी करती है।

नासिरा शर्मा इस उपन्यास के माध्यम से नारी का एक ऐसा रूप उभारकर सामने लाती है जिसमें उसे हमेशा आगे बढ़ने के लिए पुरुष के कन्धे की आवश्यकता नहीं होती वह स्वयं भी समाज में बहुत बड़ी भूमिका रखती है। रफतभाई ने जो रास्ता महरूख को दिखाया महरूख उस पर चल पड़ी और समाज के सामने एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया। गाँव जाकर गाँव का विकास किया। गाँव की लड़की अमृता जो अपने ससुराल वालों के शोषण की शिकार होकर अपना घर तबाह करने की कोशिश करती है। उसे सही राह दिखाते हुए महरूख को दिखाया गया है। महरूख के माध्यम से नासिरा जी कहना चाहती है कि औरत की लड़ाई मर्दो से नहीं अपनों से संघर्ष की है। वह औरत को मजबूत बनने की बात करती है। महरूख न तो औरत को मर्द बनाना चाहती है और न ही मर्द को औरत बल्कि वह इस बात पर जोर देती है कि हमें एक–दूसरे की जगह रहकर एक–दूसरे को समझने की जरूरत है। नासिरा जी महरूख के माध्यम से समाज की रूढ़िवादी सोच का विरोध करती है और समाज के सामने एक उदाहरण पेश करती है कि जिन्दगी केवल एक बार ही मिलती है और उसे किसी एक के लिए नष्ट करना समझदारी नहीं है। आज की नारी बिना पुरुष के सहारे जी सकती है अपने अधिकारों के लिए लड़ सकती है। नासिरा जी के इस उपन्यास में महरूख व अन्य स्त्रियों का प्रतिरोध कई स्थानों पर झलकता है। 'ठीकरे की मंगनी' की महरूख ने एक अलग तरह की औरत की मिसाल दी है जो इस पुरुष समाज की तरह न जीकर अपनी तरह की जिन्दगी जीती है। वह पुरुषों को बुरा भी नहीं कहती है जो स्वयं पुरुष को ठुकराने की हिम्मत रखती है उसके सामने झुकती नहीं है बल्कि उसे ठुकराकर स्वयं अकेले जीवन जीती भी है और जिस गांव में रहती है उसका विकास भी करती है। उपन्यास के अन्त में जब सभी भाई–बहन अपने–अपने घर जाकर बस जाते है और महरूख को साथ चलने के लिए कहते हैं तब महरूख कहती है। ''एक घर औरत का अपना भी तो हो सकता है, जो उसके बाप और शौहर के घर से अलग, उसकी मेहनत और पहचान का हो।.....''

नासिरा जी इस उपन्यास के पात्र महरूख के माध्यम से स्त्री–प्रतिरोध के स्वर को उठाते हुए समाज के सामने एक ऐसी नारी को रखती है जो विपरीत परिस्थितियों में रूकती नहीं बल्कि पुरुष प्रधान समाज के विरूद्ध आवाज उठाते हुए अकेली जीवन जीकर मिसाल कायम करती है। इस प्रकार इस उपन्यास में निम्न बिन्दूओं पर प्रतिरोध का स्वर दिखाई देता है और प्रतिरोध के साथ जीवन यापन भी किया जाता है। इस प्रकार यह उपन्यास स्त्री प्रतिरोध को मुखरता से प्रकट करने में सफल हुआ है।

सन्दर्भ संकेत :

१. नासिरा शर्मा : ठीकरे की मंगनी, किताबघर प्रकाशन, २४, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली–२, १९८९ ई., पृष्ठ संख्या – ११७
२. वही, पृष्ठ संख्या – १२०
३. वही, पृष्ठ संख्या – १३२
४. वही, पृष्ठ संख्या – १३५
५. वही, पृष्ठ संख्या – १३६
६. वही, पृष्ठ संख्या – १७८
७. वही, पृष्ठ संख्या – १२१
८. वही, पृष्ठ संख्या – १३७
९. वही, पृष्ठ संख्या – १३९
१०. वही, पृष्ठ संख्या – १८४
११. वही, पृष्ठ संख्या – १३३
१२. वही, पृष्ठ संख्या – १३५
१३. वही, पृष्ठ संख्या – १७९